संस्कृत वाङ्मय में नाट्यकला का विकास

माला देवी

नाट्यकला के विकास का इतिहास मानव–जीवन के इतिहास के साथ जुड़ा हुआ है। जैसे–जैसे मानव जीवन में विकास हुआ वैसे–वैसे नाट्य के क्षेत्र में भी विकास होता रहा है। प्रागैतिहासिक युग में मोहनजोदड़ों और हड़प्पा नामक स्थानों में जो उत्खनन हुआ है, उनमें प्राप्त अवशेषों से तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति का परिचय प्राप्त होता है। उनमें प्राप्त मूर्तियाँ तत्कालीन नाट्य एवं नृत्यकला का स्वरूप स्पष्ट करती हैं। उसके देखने से ज्ञात होता है कि उस समय नाट्यकला (अभिनय) एवं नृत्यकला विकसित हो चुकी थी और उनका समाज में पर्याप्त प्रचलन हो चुका था। नर्तक–नर्तकियों की वेश–भूषा, हस्त–पादादि की स्थिति, भावों की अभिव्यक्ति आदि तत्कालीन अभिनयकला की समृद्धि का परिचय देते हैं। इनके अतिरिक्त भी भीमबेटका की गुफाओं में आदिम नृत्य के कई रूप हैं। नृत्य में मुखौटों के प्रयोग के भी संकेत मिलते हैं।